मधुबन ओम् शान्ति अंक 301 अगस्त 2017

पत्र–पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(11-07-17)

प्राणप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा याद और सेवा के बैलेन्स द्वारा सर्वश्रेष्ठ भाग्य बनाने वाले, अपनी प्युरिटी की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी द्वारा नये विश्व के निर्माण में सदा तत्पर निमित्त टीचर्स बहनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ रक्षाबंधन के पावन पर्व की तथा भविष्य महाराजकुमार श्रीकृष्ण के जन्म उत्सव की सबको बहुत-बहुत बधाईयां।

संगमयुग पर यह पावन त्योहार भी सबको उत्साह में लाते, बेहद की सेवा कराते हैं। मीठे बाबा ने हम सबको पवित्रता की राखी बांध पवित्र दुनिया का अधिकारी बना ही दिया है। अब तो हमारी वह सतयुगी दुनिया आई कि आई। बोलो, आने वाली सतयुगी दुनिया के झाड आंखों से सामने घूम रहे हैं ना। अभी यह संगमयुग कमाई का युग है फिर सतयुग में हमें कोई मेहनत नहीं करनी है। हम सब कितने खुशनसीब हैं, जो दिल में दिलाराम बैठा है, जिसके दिल में दिलाराम है वह सदा सुख शान्ति के वायुमण्डल में रहता है। उसके पास किसी भी प्रकार के दु:ख का नाम निशान नहीं रहता। हम सबके पास खुशी और शान्ति का भण्डारा भरपूर है इसलिए दाता बन दुआयें देते रहते हैं।

संगम का बाकी यह थोड़ा सा समय है। इस समय ज्ञान, योग, धारणा और सेवा इन चारों सब्जेक्ट में एक्यूरेट रहने से जैसे संगमयुग की राजाई है। कार्य-व्यवहार में रहते हुए हम गृहस्थी नहीं, योगी हैं, ट्रस्टी हैं, हल्के हैं। जब हम याद में बैठते हैं तो इसी भान से बैठते हैं कि हम सब एक हैं, एक के हैं। सारे ज्ञान का सार प्रैक्टिकल लाइफ में है इसलिए अभिमान की अंश भी नहीं रहती। मैं कौन, मेरा कौन... तो बुद्धि हदों से निकल बेहद में चली जाती है। इसमें कोई हठयोग या प्राणायाम करने की बात नहीं है सिर्फ साक्षी हो करके बाप को साथी बनाना है, बाप मेरा साथी है तो साक्षी होकर के प्ले करना इज़ी है।

बाबा का एक-एक बच्चा जो अभी बाबा से माइट ले रहे हैं, वह लाइट हाउस का काम कर रहे हैं। हमारा योग नेचुरल है, कर्म भी नेचुरल है। यह कर्मेन्द्रियाँ कर्म करते हुए भी न्यारी हैं इसलिए बाबा का प्यार सहज खींच लेती हैं। बाबा का एक एक महावाक्य अति प्यारा, अति मीठा लगता है। बाबा ऐसे समझाता है जो मनमनाभव, मध्याजीभव से असम्भव भी सम्भव हो जाता है। सिर्फ आलस्य, अलबेलापन और सुस्ती इनसे बचकर रहना है। अपने मन को शान्त, तन को शीतल बनाकर दुनिया को ऐसा बनाने की सेवा करनी है, इसके लिए पहले हमारा कन्ट्रोल अपने ऊपर हो। दबाव नहीं है, परन्तु इसे ऑर्डर में रखना है। अगर दबाव रखेंगे तो कभी कभी थक जायेंगे। पुरुषार्थ में अथक बनना है, कभी थकना नहीं है। तो बोलो, हमारे मीठे मीठे भाई बहनें सभी ऐसे ही अथक हो ना!

देखो, यह जुलाई और अगस्त मास हमारी मीठी दीदी दादी के यादगार मास हैं। दोनों ने कितनी अथक सेवायें की हैं। दीदी सदा मर्यादा पुरुषोत्तम बनकर श्रीमत को एक्यूरेट पालन करते हुए बाबा के दिलतख्तनशीन बन गई। दादी ने फिर बड़ी दिल, विशाल दिल से यज्ञ का कितना विस्तार किया। दोनों ने पूरे परिवार को रूहानी पालना देकर सबके दिलों पर अपनी छाप छोड़ी है। हर एक दीदी दादी को दिल से याद करते, उनकी मिली हुई पालना का रिटर्न दे रहे हैं। अच्छा!

सभी हमारी और मीठी दादी गुल्जार की स्नेह भरी याद स्वीकार करना जी।

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

“प्रतिज्ञा द्वारा प्रत्यक्षता के निमित्त बनो”

1) परमात्म प्रत्यक्षता के लिए लास्ट सो फास्ट पुरूषार्थ है - प्रतिज्ञा। कोई भी बात की प्रतिज्ञा करना कि यह करना है, यह नहीं करना है। संकल्प किया और स्वरूप हुआ, ऐसी प्रतिज्ञा ही प्रत्यक्षता के निमित्त बनेंगी। तो प्रतिज्ञा से अपने को और बाप को प्रख्यात करो।

2) प्रतिज्ञा करो कि सिवाए आत्मा रूपी मणी के और कुछ नहीं देखेंगे, इसी प्रतिज्ञा से माला के मणि बन करके सारी सृष्टि के बीच चमकेंगे। इस प्रतिज्ञा से ही प्रत्यक्षता होगी। अब प्रयत्न करने का समय गया। अब प्रतिज्ञा और अपने सम्पूर्ण रूप की प्रत्यक्षता करनी है। स्वयं को साक्षात् बाप समान साक्षात्कार मूर्त बनाना है।

3) प्रतिज्ञा करो कि कभी भी किसी भी हालत में माया से हार नहीं खायेंगे। वेस्ट को खत्म करके बेस्ट बन परमात्म गले का हार, श्रृंगार, विजयी रत्न बनेंगे। जब कोई परीक्षा आये तो यही प्रतिज्ञा याद करो। जब सभी ऐसे बेस्ट बन जायेंगे तब ही प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेगा।

4) अपने आपसे दृढ़ प्रतिज्ञा करो कि अब से यह पुराने संस्कार, व्यर्थ संकल्प कभी भी उत्पन्न होने नहीं देंगे। जैसे कोई भी प्रतिज्ञा जल को साक्षी रखकर करते हैं, ऐसे बाप भी बच्चों से यह जल की लोटी चढ़वाते हैं, प्रतिज्ञा करो कि आज से क्यों की क्यू को खत्म करेंगे क्योंकि इस क्यों शब्द से ही व्यर्थ संकल्पों की क्यू शुरू हो जाती है। जब यह क्यों शब्द खत्म हो जायेगा तब ड्रामा की भावी पर एकरस स्थेरियम रह सकेंगे।

5) सभी को अपने आपसे तीन प्रतिज्ञायें करनी है:- 1- सहनशीलता का बल अपने में धारण करेंगे। 2- व्यर्थ पर फुलस्टाप लगायेंगे और 3- आसुरी संस्कारों पर पहरा देंगे। इसके लिए पुरानी बीती हुई बातों को कभी भी स्मृति में नहीं लाना। कैसी भी समस्या आये, कोई भी कारण बने लेकिन और कोई पर भी बलि नहीं चढ़ना। एक बाप दूसरा न कोई, यह पाठ पक्का करना।

6) पुरुषार्थ में जो भी नुकसानकारक बातें हैं, उन्हें समेटने और समाने की प्रतिज्ञा करो फिर उसको चेक भी करो। सदा यह स्लोगन स्मृति में रहे कि ‘अब नहीं तो कब नहीं’। कब कर लेंगे, ऐसा नहीं सोचो। अभी बनकर दिखाओ। जितना प्रतिज्ञा करेंगे उतनी परिपक्वता वा हिम्मत आयेगी और फिर सहयोग भी मिलेगा।

7) रोज़ इस प्रतिज्ञा का तिलक लगाओ कि हर बात में पास विद आनर बनकर दिखायेंगे। पास विद आनर अर्थात् संकल्पों में भी सजा न खायें। वाणी, कर्म, सम्बन्ध, सम्पर्क की बात छोड़ दो। वह तो मोटी बात है लेकिन संकल्पों में भी न उलझें, न मूंझें - ऐसी प्रतिज्ञा करने वाले हिम्मतवान बनो।

8) प्रतिज्ञा द्वारा पुरानी बातों को, पुराने संस्कारों को ऐसा परिवर्तन में लाओ जैसे जन्म परिवर्तन होने के बाद पुराने जन्म की बातें भूल जाती हैं। ऐसा पुराने संस्कारों को भस्म कर दो, उन अस्थियों को भी सम्पूर्ण स्थिति के सागर में समा दो।

9) सम्पूर्ण स्वरूप को धारण करने की अपने आपसे प्रतिज्ञा करो, प्रयत्न नहीं। अब प्रयत्न का समय गया। अब प्रतिज्ञा और सम्पूर्ण रूप की प्रत्यक्षता करनी है। साक्षात् बाप समान साक्षात्कार मूर्त बनना है। ऐसे अपने आपको साक्षात्कार मूर्त समझने से कभी भी हार नही खायेंगे।

10) जो प्रतिज्ञा की जाती है उसको पूर्ण करने के लिए पावर भी चाहिए। कितना भी सहन करना पड़े, सामना करना पड़े लेकिन प्रतिज्ञा को पूरा करना ही है। भल सारे विश्व की आत्माएं मिलकर प्रतिज्ञा से हटाने की कोशिश करें तो भी प्रतिज्ञा से नहीं हटेंगे लेकिन सामना करके सम्पूर्ण बनकर के ही दिखायेंगे। ऐसी प्रतिज्ञा करने वालों का ही यादगार अचलघर है।

11) जिस बात की फोर्स से प्रतिज्ञा की जाती है वह प्रतिज्ञा प्रैक्टिकल रूप ले लेती है क्योंकि उसमें विल पावर होती है। जैसे स्थूल कार्य कितना भी ज्यादा हो लेकिन प्रतिज्ञा करने से कर लेते हो। अगर ढीला विचार होगा, न करने का ख्याल होगा तो कभी पूरा नहीं करेंगे। फिर बहाने भी बहुत बन जाते हैं। प्रतिज्ञा करने से फिर समय भी निकल आता है और बहाने भी निकल जाते हैं।

12) जब से जन्म लिया है तब से प्रतिज्ञा की है कि मन अर्थात् संकल्प, समय और कर्म जो भी करेंगे वह बाप के ईश्वरीय सेवा अर्थ करेंगे। अगर ईश्वरीय सेवा की बजाए कहाँ संकल्प वा समय वा तन द्वारा व्यर्थ कार्य होता है तो उनको सम्पूर्ण वफादार नहीं कह सकते इसलिए सम्पूर्ण वफादार बनो।

13) अपने आपसे प्रतिज्ञा करो कि छोटी-छोटी बातों में मेहनत नहीं लेंगे, किसी भी माया के आकर्षित रूप में धोखा नहीं खायेंगे। सदैव यही स्मृति रखो कि हम दुःख हर्ता सुख कर्ता के

बच्चे हैं। किसके भी दु:ख को हल्का करने वाले स्वयं कभी भी एक सेकेण्ड के लिए भी संकल्प वा स्वप्न में भी दु:ख की लहर में नहीं आयेंगे।

14) प्रतिज्ञा करो कि कभी किसी रूप में भी, किसी भी परिस्थिति में माया से हारेंगे नहीं लेकिन लड़ेंगे और विजयी बनेंगे। मायाजीत बनकर दिखायेंगे। 2- अपने आपको सतोप्रधान बनाकर दिखायेंगे। 3- विस्मृति के संस्कारों को सदा के लिए विदाई देंगे। 4- सदा हिम्मत हुल्लास में रहेंगे और दूसरों को भी हिम्मत दिलायेंगे।

15) आप सबका पहला-पहला व्रत वा प्रतिज्ञा है कि मन वाणी और कर्म में पवित्र रहेंगे। एक बाप दूसरा ना कोई, यह व्रत सभी ने लिया है। तो सदैव इस व्रत को स्मृति में रखो। स्मृति से कभी वृत्ति चंचल नहीं होगी। प्रवृत्ति, परिस्थिति वा प्रकृति के कोई भी विघ्नों वश नहीं होंगे।

16) लास्ट सो फास्ट पुरूषार्थ की विधि है - प्रतिज्ञा। कोई भी बात की प्रतिज्ञा करना कि यह करना ही है, यह अभी नहीं करना है। प्रतिज्ञा अर्थात् संकल्प किया और स्वरूप हुआ। प्रतिज्ञा करने में सेकेण्ड लगता है। तो अब फास्ट पुरूषार्थ एक सेकेण्ड का ही होना चाहिए।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 16-01-14 *मधुबन*

"प्रभु लीला देखते, तन-मन-धन-सम्बन्ध से अपना भाग्य बनाते चलो, सफल करो सफल कराओ"

(दादी जानकी)

सारा ज्ञान दो शब्दों में, तीन शब्दों में, चार शब्दों में, पाँच शब्दों में वर्णन करें! पहले दो शब्दों में मनमनाभव मध्याजीभव। फिर तीन शब्द मैं आत्मा हूँ, मेरा बाबा है, ड्रामा एक्यूरेट है। मैं कहना बड़ा बदल गया है, मेरा बाबा कहने से बड़ा प्यार और शक्ति अनुभव होने लगी है, ड्रामा वण्डरफुल है सारी सभा को देख, प्यारे प्रभु रत्नों को देख यह गीत जरूर याद आता है रचना जिसकी इतनी सुन्दर वो रचता कितना सुन्दर होगा! सामने रचता को देखो, रचना को यहाँ देखो। लगता है वण्डर है ड्रामा का, यज्ञ की हिस्ट्री के आदि मध्य अन्त सब इन आँखों से देखा है, जाना है, पहचाना है, अनुभव किया है। हमने देखा हमने पाया शिव भोला भगवान... तो बाबा ने कहा राँग है हमने जाना हमने पाया, पहले जाना तब पाया शिव भोला भगवान। कितना भोला है, जितना ही भोला है उतना लवफुल, लॉफुल भी है। जो कर्म करेगा देखना, ऐसे भी प्यार करता है, इशारे भी देता है। कहता है सजा मैं नहीं देता हूँ, जो भी कर्म करते हो तुम ही भोगते हो। उसी घड़ी बाबा का रूप कैसा है, यह मैंने प्रैक्टिकली आँखों से देखा है।

अभी आजकल कईयों को यह बात जंची है असोचता, अभोक्ता, अकर्ता स्थिति का अनुभव करो। सोचो नहीं। कई कहते कुछ तो सोचना पड़ेगा, जरुरत नहीं है। कौन ऐसा बैठा है जो कहता है - मैं अनुभव करता हूँ असोचता, अभोक्ता, अकर्ता...।

अहो प्रभु तेरी लीला... कहाँ पाण्डव भवन इतना छोटा। अभी पाण्डव भवन ही इतना बड़ा हो गया है, पहले मेडिटेशन हॉल में ही था। अभी ओम शान्ति भवन, कल सारा हॉल फुल था। तो यह किसकी लीला है? प्रभु लीला है ना। कईयों का भाग्य बना होगा, कईयों को भाग्य बनाने की बहुत अच्छी तरह से जैसे जन्मते ही कला आ जाती है। कोई बड़े हो गये हैं, तो न करते हैं, न कराते हैं। बूढे हो गये हैं। पर कोई बाबा के बनते जन्मते ही सफल कर रहे हैं, करा रहे हैं। प्रभु लीला के रूप में देखो कितना बड़ा भण्डारा..., दिल कहता है मैं रोज भण्डारे का चक्कर लगाऊं। भण्डारे वालों के लिए कितना प्यार है। हम तो खाते हैं सिर्फ, वो बनाते हैं खिलाते हैं पर भण्डारे में जो डालने वाले हैं उनका कितना भाग्य है। जिसका यज्ञ के भण्डारे से प्यार है ना, उसका भण्डारा अच्छा है। शिवबाबा का भण्डारा और ब्रह्माबाबा का कमाल है, हाथ से ब्रह्माभोजन खिलाता है, मुख से सुनाता है।

तन, मन, धन और सम्बन्ध चारों मेरा नहीं है। चारों मेरा है तन है, मन है, धन है, सम्बन्ध है पर मेरा नहीं है। साक्षी हो करके देखो यह तन मन धन सम्बन्ध चारों से जो हमारी

न्यारेपन की, एक्यूरेट ट्रस्टी रहने की, सेवा भावना है उसका फल है सबकी दुआयें मिलती हैं, थकावट नहीं होती है। यह तन है ही सेवा के लिए, मैं आत्मा बाबा की हूँ, तन मेरा नहीं है किसने कहा? मन ने कहा तन मेरा नहीं, बुद्धि मेरी नहीं। किसकी है? सेवा अर्थ है। तो तन मन धन सम्बन्ध चारों को साक्षी हो करके देखो वण्डर तो यह है, बाबा मेरा साथी है, कहता है साक्षी हो करके पार्ट बजाओ।

तन, मन, धन, सम्बन्ध वही है पर कैसे चल रहा है? बाबा मेरा साथी, बनाया है साक्षी। जैसे खुद साक्षी है ना हमको कहता है भूँ भूँ करके औरों को आप समान ब्राह्मण बनाओ। खुद क्या करता है? वैसे आत्मा अकेली है पर बाबा कहता है तुम मेरे सिवाए नहीं चल सकते हो। क्या करेंगे? कोई न कोई देहभान में आ करके कोई देहधारी से लगाव हो जायेगा। खतरा है इसलिए अगर बाबा का साथ नहीं होगा, कभी भी अकेले होंगे, भले कितना भी कहो मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ पर कोई न कोई देहधारी का लगाव किसी का मेरे से... ऐसी खबरें सुनती हूँ, देखा भी है, अचानक माया देहधारी के तरफ खींच लेती है और बाबा से दूर कर देती है फिर बहुत मेहनत करते हैं तो भी समझते हैं अभी भी मैं ठीक हूँ। क्या यह ठीक है? कभी भी मेरे देह से किसी का लगाव हुआ, मेरा नहीं उनका है, यह भी दोषी मैं हूँ। दूसरे को दोषी बनाना आसान है पर अपने दोष को देखना है, अगर कोई भी मेरा दोष हुआ तो बाबा के दिल से उतर गये।

बाबा को मैं कहती हूँ बाबा आप तो भक्तिमार्ग शुरू होते ही सोमनाथ का मन्दिर बनायेंगे, बाबा बनायेगा ना! बाबा का प्लान है ना। मैं दिलवाला मन्दिर बनायेंगी, मेरा यह प्लान है क्योंकि दिल में कोई बात नहीं रखनी है ना, दिल को सम्भालके रखा है। दिल को दिलाराम का साथ मिलने से सुख शान्ति रूपी बच्चे बड़े अच्छे मिले हैं। जैसे कि छोटा परिवार सुखी परिवार। सारी विदेश सेवा दिल से और दिलाराम की मदद से तो हुई है। दिलाराम बैठा है, शान बढ़ा रहा है, मैं किसकी हूँ? दिलाराम की। और मेरे दो बच्चे हैं सुख शान्ति। सुख है बेटा, शान्ति है बेटी। दोनों अच्छा काम करते हैं, बाप का नाम बाला करते हैं, बच्चे हो तो ऐसे। ऐसे दिलाराम के साथ दिल लगी तो और क्या चीज़ है! हिम्मते बच्चे मददे बाप, सच्ची दिल पे साहेब राज़ी। यहाँ कई हैं जिसको धर्मराज का डर नहीं है पता नहीं कैसे चलते हैं, हमको डरपोक नहीं बनना है पर विकर्म नहीं करना है। अच्छा – ओम् शान्ति।

दूसरा क्लास

"ईश्वरीय परिवार में स्नेह की सकाश लेना वा खींचना यह भी पद्मापद्म भाग्य है"

(दादी जानकी)

हम बच्चों को सिर्फ फॉलो करना है, श्रीमत को सिरमाथे पर रखना है। अन्दर से विदेही की प्रैक्टिस नेचुरल हो, विदेही और ट्रस्टी रहने का बाबा ने वरदान दिया है। जब अन्दर से बाबा शब्द निकलता है तो दिल कहता है वह मेरी माँ भी है इतना प्यार करेगा कौन! जितना करती है मीठी माँ। जैसे हैं वैसे हैं, अपना बना लिया है। उसके रिटर्न में मेरे को मुस्कुराना है। बाबा ने आत्मा का ज्ञान देकर लाइट बना दिया है, आत्मा लाइट बन गई। लाइट माना हल्का और लाइट माना रोशनी। दुनिया में अन्धकार भी है, नयनहीन भी हैं। बाबा ने रोशनी भी दी है, नयन भी दिये हैं। तो अभी काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की ठोकर खाने से बच गये। सबसे बड़े ते बड़ी ठोकर है काम वा क्रोध के वश होना, इससे जितने भी अच्छे कर्म किये ना वो सब खलास। जरा भी दृष्टि वृत्ति कामेशु क्रोधेशु, लोभ मोह वश न हो। अन्दर ही अन्दर सच्चा पुरुषार्थी, तीव्र पुरुषार्थी, निरंतर पुरुषार्थी होकर रहना है। अन्दर यही भावना है कि किसी में भी काम क्रोध की अंश न हो। लेकिन यह होगा सोल-कॉन्सेस बनने से। परमात्म शक्ति हमको आत्म-अभिमानी बनाती है।

ब्रह्माबाबा कहेंगे शिवबाबा को याद करो, शिवबाबा कहेगा ब्रह्माबाबा को फॉलो करो। यह दोनों के महावाक्य बहुत अच्छे हैं। शिवबाबा को याद करने से शान्त हो जायेंगे, ब्रह्माबाबा को याद करेंगे तो वह जो सुना रहा है वो उस

स्वरूप में आ जायेगा। ब्रह्मा के मुख से जो सुना है वो हमारे जीवन रूपी यात्रा में हो। बाबा ने हम बच्चों को अच्छी जीवन जीने की कला सिखाई है। भक्तिमार्ग में तो कल्प की आयु ही लाखों वर्ष कह दी है। फिर कह देते हैं मनुष्य अनेक योनियों में जाता है। पशु-पंछी, कुत्ता-बिल्ली, सुअर बनता है, यह सुनके डर लगता था। पर यहाँ बाबा के पास आते ही बाबा ने सुनाया कि 5 हजार वर्ष का कल्प है, यह सुन करके शान्ति आ गई। दूसरा मनुष्य, मनुष्य जन्म में ही कितनी भोगना भोगता है, बाकी कुत्ता, बिल्ली, सुअर नहीं बनेगा, बाबा की इस बात ने मन को शान्ति दी, दिल को लगा मनुष्यात्मा मनुष्य जन्म में ही अच्छे बुरे कर्मों का फल भोगती है।

तो पहले पुराने जो भी कर्म हैं वो मिटें और कटें, जो किया है वो कर्म की फिलोसॉफी बहुत गहरी है, वो मिट जाये और श्रेष्ठ कर्म से कट जाये। ऐसा मिटे नाम-निशान भी न रहे। कटे कैसे? ज्ञान योग की ताकत से कट गया, दूसरा ज्ञान दाता के स्नेह से मिट गया। अभी कोई भी कर्म ऐसा न हो जिसकी भोगना भोगनी पड़े। इसके लिए कर्म करें पर योगी रहें क्योंकि हम राजयोगी हैं, कर्म बिगर रह नहीं सकते हैं। तो कर्म कैसे करना है वो भी बाबा ने सिखाया है।

बाबा को हमारे ऊपर दया आई, दुनिया से खींचके अपना बना लिया। तो बाबा कितना रहमदिल है, हमारी कोई कमी-कमजोरी नहीं देखा, ऐसे करके मिटा दिया है। गलती से कुछ हो भी गया, सच्ची दिल से बाबा को बताओ तो बाबा कहेगा आगे नहीं करना। ठीक है कहके बाबा क्षमा कर देगा। तो जिस प्रकार से बाबा को याद करो, बाबा की याद में दया, रहम, क्षमा भरी पड़ी है। मुझे कोई पूछते आप बाबा को कैसे याद करती हो? मुझे उसके सिवाए और कोई बात याद आती ही नहीं है। भले 8 दिन लण्डन का चक्कर लगाया लेकिन जैसे स्वप्नवत् हो गया। कोई बात याद नहीं, अच्छी-अच्छी बातें हुई, अच्छा हुआ। उसके लिए मेरी कोई महिमा करे, जरुरत नहीं है। महिमा सारी बाप की है। तीसरा नेत्र खोलके रचता की रचना को देखें तो वण्डर लगेगा, सिर्फ यह तीसरी आँख कभी बन्द न हो जाये या यह आँखें कभी लोभ, मोह वश न देखें क्योंकि देह-अभिमान वश देखेंगे तो कोई काम के नहीं रहेंगे।

अच्छी तरह सुनो, समाओ, स्वरूप में आओ, यह इतना मीठा मीठा बाबा प्यार से हमको कहता है तुम मेरे सिकीलधे, लाडले बच्चे हो क्योंकि कल्प पहले वाले हो ना। फिर से मिले हो ना, हम भी कहेंगे बाबा भी हमको मिला है ना। हमको बाबा मिला है, बाबा को हम मिले हैं। अभी किसका शुक्रिया मानें, बाबा का या ड्रामा का? हमने तो बहुत गुरू किये, शास्त्र पढ़े, चारों धाम की यात्रा की परन्तु हमारे से वह दूर रहे, अभी दूर रहना अच्छा नहीं लगता है। मैंने आँखों से देखा कैसे शिवबाबा ब्रह्माबाबा में आया, वाह रे वाह, वाह बाबा वाह! वाह बाबा के बच्चे वाह! वाह ड्रामा वाह! जब से बाबा आया है वाह वाह हुआ है, जो व्हाई व्हाई करते हैं वो हाय हाय करते हैं इसलिए वाह बाबा वाह! वाह बाबा के बच्चे वाह!

जब मैं दादी गुल्जार को देखती हूँ तो अन्दर से आता है बाबा ने कैसे इन्हें अपना रथ बना दिया। कमाल है इस रथ की। तो ईश्वरीय परिवार में स्नेह की सकाश लेना, खींचना यह एक बड़ा भारी पदमापदम भाग्य का काम है। ईश्वरीय स्नेह की सकाश चला रही है, चल रहे हैं। सच्चाई से यह सकाश मिली। सच्चाई में 1 परसेन्ट भी मिक्स न हो तब सच तो बिठो नच कहेंगे। सच्चाई कदम कदम पर बाबा को फॉलो करने में मदद करती है। 1 कदम में 10 कदम बाबा की मदद है। 10 कदम उठाओ तो 100 कदम मदद है, अभी 1000 गुना बाबा की मदद है क्योंकि उसको अपना मददगार हमको बनाना है। वन्डरफुल है बाबा, वो भी होशियार है। मदद करके फिर आखिर हमारे को आगे रखता है। पहले पहले बाबा ने कहा सन शोज् फादर, फादर शोज् सन, सन का काम है बाबा का शो करना। बाप का काम है बच्चे को आगे रखना। बाप है तो कैसा, बच्चा है तो कैसा। बच्चे के फीचर्स से पता चलता है, यह किसका बच्चा है। अभी मैं किसका बच्चा हूँ फिर फ्यूचर मेरा कैसा होगा... ऐसे बाबा को प्यार से याद करते हो या ऑटोमेटिक उसकी याद है ही। और कोई भी बातें भुला देती हैं, हो गया, ड्रामा। जो होगा सो ड्रामा।

यहाँ है भगवान, यहाँ है भाग्य, मैं हूँ बीच में। भगवान भाग्य बनाता है और भाग्य मेरे हाथों में देता है। बाबा कहता है कराने वाला मैं हूँ, तुमको सिर्फ करना है, जी बाबा। फिर न दुःख देना, न दुःख लेना इसके लिए दिल बड़ी, सच्ची, मजबूत हो। दूसरा बाबा ने कहा बच्ची, सदा हाँ जी कहा है ना, तो बाप तुम्हारे साथ सदा हाज़िर है, इतना बाबा साथ देता है। सामने भी है साथ भी है, भगवान जिसके सामने हाज़िर है हमको सिर्फ हाज़िर रहना है, न अपसेट होना है, न अबसेंट होना है। अच्छा।

"आन्तिम पेपर में पास होने के लिए बहुतकाल से अशरीरी बनने का अभ्यास चाहिए"

(गुल्जार दादी जी)

अशरीरी अवस्था क्या है? अशरीरी बनना अर्थात् शरीर से गुम हो जाना, शरीर का भान ही नहीं रहे उसके लिए थोड़ा अभ्यास और चाहिए जो एकदम हम बैठे और अशरीरी हो जायें। अभी सेवा का विस्तार है, इसलिए विस्तार में थोड़ा टाइम लगता है लेकिन अन्त में तो सेकण्ड की बात होगी। उस समय अगर हम अभ्यास करेंगे कि मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ,.. यह तो जैसे योद्धे हो गये, फिर सूर्यवंशी कैसे बनेंगे, इसीलिए अभ्यास तो अभी से ही करना है।

जैसे शुरू में हम लोगों ने पुरुषार्थ के लिए अलग-अलग ग्रुप बनाये हुए थे। जैसे एक मनोहर पार्टी, एक डिवाइन पार्टी, एक सुप्रीम पार्टी... ऐसे नाम भी पड़े हुए थे। तो हम लोगों को इतना योग का उमंग-उत्साह रहता था कि हमारी पार्टी नम्बरवन जाये, एक दो से रीस नहीं करते थे, रेस करते थे। अलग-अलग ग्रुप में बैठकर रूह-रिहान करते थे। उन दिनों में अशरीरीपन की स्थिति का बहुत जल्दी अनुभव होता था, अभी कारोबार में थोड़ा टाइम लगता है। चलो एक सेकण्ड भी लगे लेकिन एक सेकण्ड में तो बहुत कुछ हो जायेगा।

बाबा भी अमृतवेले के योग के बाद पाण्डव भवन के आंगन में पहाड़ी थी, उस पर खड़े होकर योग कराते थे, बाबा की दृष्टि ऐसी पड़ती जो हम सब अशरीरी हो जाते थे। बाबा जैसे एकदम लाइट हाउस बनके ऐसे खड़े होते थे, सीढ़ी पर हम नीचे होते थे। तो बाबा ऐसी पॉवरफुल दृष्टि देता था तो जितने भी वहाँ खड़े होते थे उनको पता ही नहीं पड़ता था कि हम खड़े भी हैं और कौन-कौन खड़ा है। कुछ भी सुधबुद्ध नहीं होती थी, एकदम अशरीरी अवस्था में बाबा भी लाइट हाउस और हम भी जैसे लाइट हाउस बनके खड़े हैं। तो यही प्रैक्टिस अन्त में काम आयेगी। बिना अशरीरी बनने के अभ्यास के हम पास कैसे होंगे, तो अन्त के सरकमस्टांश अनुसार हालतों के अनुसार अशरीरी बनने का अभ्यास बहुत-बहुत जरुरी है। और अभी से नहीं करेंगे तो फिर कब करेंगे। अन्त में अगर हम बाबा से मदद मांगेगे तो बाबा भी क्या करेगा! उस समय बाबा-बाबा कहने से क्या होगा! अगर बाबा के सामने फरियादी बन करके गये, तो यह फरियाद करना योग तो है ही नहीं। फरियाद करने वाले को बाबा की मदद कैसे मिलेगी, इसीलिए हम समझते हैं कि यह जो भट्ठीयाँ हो रही हैं यह बहुत जरुरी है, किसी को भी मिस नहीं करना चाहिए। भट्ठी में नैचुरल बाबा का बल एक्स्ट्रा होता है क्योंकि प्रोग्राम बाबा ही देता है। तो उसमें एक्स्ट्रा बल मिलता है। लेकिन हम यह अभ्यास लगातार करते चलें। हमने देखा है प्रोग्राम प्रमाण मदद मिलती है, वह प्रोग्राम ही एक लिफ्ट होता है, जिसमें सहज प्राप्ति होती है वह ठीक है लेकिन जब तक अपने मन का उमंग नहीं आया है, तो अविनाशी नहीं रहेगा। मन में एकदम लग जावे। कोई भी बात देखो दु:ख की भी दिल में लग जाती है या खुशी की दिल में लग जाती है, तो वह मिटना बहुत मुश्किल है, कितना प्रयत्न करते हैं। कोई का कोई शरीर छोड़ता है, अगर उसके दिल में लग जाता है, तो वह भूलना बहुत मुश्किल होता है। दु:ख का जो रूप होता वह उस समय दिखाई देता है। तो हम लोगों को भी जब तक दिल से नहीं आया है कि मुझे अभी अशरीरी बनने के अभ्यास में रहना है। एक बारी बाबा ने बहुत अच्छी बात सुनाई थी, बाबा ने कहा - बच्चे समझते हैं हम सेवा बहुत अच्छी करते हैं, जिम्मेवारियाँ है ना, जिम्मेवारियाँ निभा रहे हैं, वह भी तो देखना है। तो बाबा ने कहा यह क्या बड़ी बात है, अज्ञानी भी तो बड़ी बड़ी फैक्ट्रियां चलाते हैं, हजारों लोगों को कन्ट्रोल करते हैं। वह भी तो अपनी जिम्मेवारियां निभाते हैं, अगर आप ज्ञानियों ने अपनी ड्युटी अच्छी तरह से निभाई तो क्या बड़ी बात है। हमारे में और उन्हों में अन्तर क्या है? कि हम डबल काम करते हैं, हमारा आध्यात्मिक वायब्रेशन भी वायुमण्डल फैलाता है। और दूसरा कर्म का भी बल मिलता है। हमारी डबल सेवा है, हमारी नवीनता यह है। और वह नवीनता अगर हमारे में नहीं है तो दुनिया वाले भी बहुत रेसपान्सिबिल्टी सम्भालते हैं। दुनिया चल तो रही है ना। कोई तो अच्छे होंगे, भले मैजारिटी उल्टे हैं लेकिन कोई तो अच्छे होंगे ना, जिससे चल रहा है। तो बाबा ने यही कहा कि यह नहीं समझो हमारे पास बहुत काम है, ड्यूटी निभानी है। उसी में ही बुद्धि जाती है। इसमें नई बात क्या है? दुनिया वाले सारा सम्भाल रहे हैं, आप भी सम्भाल रहे हैं, क्या बड़ी बात है? वह कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन बड़ी बात है डबल कमाई करने की। हमको तो एक्स्ट्रा बल मिलता है। हमको बाबा की मदद है, उन बिचारों को बाबा की मदद तो नहीं है। भले भक्तिमार्ग में थोड़ा बहुत सहयोग मिलता है लेकिन सभी भक्त भी तो नहीं है ना। फिर भी काम तो करते हैं, ड्यूटी तो सम्भालते हैं ना! आठ-आठ घण्टे क्या ओवरटाइम भी करते

हैं। वह क्या बड़ी बात हुई, तो बाबा ने कहा यह बड़ी बात नहीं समझो। ड्यूटी सम्भालनी है, एक्यूरेट करनी है, वह तो होना ही है क्योंकि आपको डबल शक्ति है। बाबा की गुप्त मदद से ही सारी कारोबार चल रही है, बाबा बुद्धिवानों की बुद्धि टच करके निमित्त बनाता है। है तो बाबा की कमाल। हम लोगों का भाग्य बीच में बन जाता है। लेकिन कराने वाला तो बाबा है ना। बाबा खुश होके हमें दे देता है, खुद तो लेने वाला है ही नहीं ना, इसलिए हमको फल दे देता है और मेहनत खुद करता है। मेहनत उसको है ही नहीं। निराकार है इसलिए कर देता है, तो हमको बाबा की मदद एक्स्ट्रा है। तो हमारा एक्स्ट्रा कुछ होना चाहिए ना। साधारण थोड़ेही होना चाहिए!

अभी वर्तमान समय के हिसाब से दुनिया इतनी खराब हो रही है, शहरों में देखो एक तो वायुमण्डल प्रदूषण का इतना बढ़ रहा है जो लोग बिचारे समझ ही नहीं पा रहे हैं कि दो चार साल के बाद क्या होगा! लेकिन हम तो समझते हैं कि क्या होगा! परिवर्तन होना है और क्या होना है। सचमुच बाहर वायुमण्डल इतना खराब है जितने बड़े शहर उतनी बुराईयां। अब यह सब परिवर्तन तो होना है ना।

बाबा हम सबको कहते हैं बच्चे अचानक कुछ भी हो सकता है इसलिए समय अनुसार सभी एवररेडी रहो। कोई भी सीन पूछके तो नहीं आयेगी। किसकी भी डेट फिक्स नहीं है। ज्योतिषी भले बताते होंगे, बाकी बाबा ने तो बताई नहीं है। न समय की डेट बताई है, न हरेक को अपनी डेट का पता है, किसको पता है क्या? हमारी टिकट इस समय कटने वाली है, यह पता किसको है?

समाचार अगर आप सुनेंगे तो वन्डर लगेगा। ब्राह्मण परिवार का भी समाचार सुनो, तो आपको यही आयेगा कि अभी कभी भी कुछ भी अचानक हो सकता है। ऐसे किस्से ब्राह्मणों में भी हो रहे हैं। हमारा ब्राह्मण परिवार कोई कम है क्या? फारेन, इण्डिया कितने हैं! चारों ओर के समाचार कितने होंगे। अभी यह समय अति में जा रहा है। तो अति के समय अगर हम पॉवरफुल नहीं होंगे तो बताओ समय हमारे से तेज और हम रचता जो हैं, वह पीछे-पीछे उसके चलें, यह राइट है? रचना तो तेज और रचता बिचारा ऐसे ही डमक-डमक करके जा रहा है... ऐसे अच्छा लगेगा! तो अपनी धारणा अभी बहुत-बहुत, बहुत-बहुत अच्छी होना जरूरी है। अण्डरलाइन करो इस बात को। जो कहते हैं कोशिश करेंगे, अटेन्शन देंगे, तो बाबा ने कहा देखो जो कहता है मैं कोशिश करूँगा, उसको अपने में ही संशय है! क्यों कहता है कोशिश करूँगा। शक्य है अपने में, पता नहीं हो सके या नहीं हो सके। अगर मेरे को निश्चय है कि मुझे करना ही है तो मैं कोशिश शब्द कहूँगी? अगर कोशिश शब्द कहते हैं तो अपने में संशय उत्पन्न कर लिया। जब अपने में संशय उत्पन्न हो गया तो संशयबुद्धि विजयी कैसे होगा? तो बाबा कहते पहले अपने में तो निश्चय रखो, निश्चय सिर्फ बाबा में है, हम कल्प पहले वाले हैं, कल्प पहले मुआफिक बाबा मिला है, बाबा में हमारा बहुत 100 प्रतिशत क्या इससे भी ज्यादा निश्चय है। अपने में निश्चय है ही नहीं। और बाबा में निश्चय है तो अपना संशय तो अपने ऊपर ही लगा रहे हैं, जैसे कहते हैं ना अपने पैर पर आपेही कुल्हाड़ा मार दिया। तो संशय अपने को ही खायेगा और किसको खायेगा? तो ऐसा नहीं कोशिश करेंगे, देखेंगे... देखेंगे माना कुछ मार्जिन है। अभी बाबा कहते बच्चे पुरुषार्थ में यह दृढ़ता से संकल्प करो कि 'करना ही है'। 'ही' शब्द को अभी अण्डरलाइन करो। करना ही है न कि करेंगे, देखेंगे, सोचेंगे, विचार तो है, उमंग तो बहुत है, यह बातें बाबा को सुनाके बाबा को खुश नहीं करो। अरे गे, गे.. कर रहे हो, दिखायेंगे क्या! क्या कमाल दिखायेंगे? इसीलिए करना ही है। 'ही' शब्द को अण्डरलाइन करो कुछ भी हो जाये, क्या भी हो जाये। लेकिन करना ही है। यह तीव्र पुरूषार्थी का संकल्प है। बाकी वह जो घोड़ेसवार प्यादे जो भी हैं, उन्होंके शब्द हैं। कई फिर कहते हैं हम पुरूषार्थ तो अच्छा करते हैं, अपने आप से सन्तुष्ट भी हैं लेकिन हमारे को कोई जानता ही नहीं है। कोई पहचानता ही नहीं है। उस अनुसार हमको कोई सीट ही नहीं मिलती है। अरे सीट तो आपकी पहले ही सतयुग में भी फिक्स हो गई है, बाबा के घर में भी फिक्स है यानि बाबा की दिल में तो आपकी फिक्स है ना। लेकिन कईयों का फाउण्डेशन रेत पर है। मानो कोई ने ठीक बात नहीं की, पानी की ग्लास नहीं पूछा तो रूठ जायेंगे। यह भी फाउण्डेशन हुआ क्या? अरे बड़ा बनना माना उखली में मुँह डालना। बड़ा बनना है तो किसी से नहीं डरना। ऐसे बड़ा बनना कोई मासी का घर नहीं है। पोजीशन वा सीट लेना कोई छोटी सी बात नहीं है। कई ऐसे भी समझते हैं कि महारथी तो मौज में रहते हैं, हम लोग तो काम करते हैं। महारथी तो आराम से रहते हैं। लेकिन उन्होंके आगे जो समस्यायें आती है वह आपके आगे तो चीटीं भी नहीं आती हैं। लेकिन वह बाहर से तो दिखाई नहीं देता है इसलिए कहते बड़ों को आराम है, पोजीशन है। लेकिन वास्तव में जितना बड़ा उतनी बड़ी बातें आयेंगी लेकिन बड़ा होने के कारण उनमें शक्ति भरी होती है। हिम्मत के बिना बाबा की मदद नहीं होती है - यह हिसाब है। एक कदम उठाने का कर्म हम करें फिर बाबा मदद करेगा। बाकी सिर्फ बाबा ही सब कुछ करें, यह नहीं हो सकता। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"सेवाधारी माना त्यागी और तपस्वी"

1) हम सबका पहला लक्ष्य है कि हमें कम्पलीट पवित्र राजऋषि बनना है। राजऋषि का अर्थ है पवित्र। योगी का अर्थ है निरन्तर एक बाप के साथ सर्व सम्बन्ध हों अथवा योग हो, जिस योग से विकर्म विनाश हों। तो एक लक्ष्य है हमें पावन बनना है, दूसरा लक्ष्य हुआ कि हमें राजयोगी बनके अपने पास्ट 63 जन्मों के विकर्म विनाश करने हैं। तीसरा है हम तपस्वी हैं, हमें अपने संस्कारों को तपोबल से परिवर्तन करना है। तपस्या का अर्थ ही है हे आत्मा तुम अपने को तप में रखो, जिस तप से आप अपनी कर्मेन्द्रियों पर विजय प्राप्त करो। कर्मेन्द्रियों को शीतल बनाना - उसके लिए ही यह तपस्या है और तपस्या का फाउन्डेशन है ज्ञान। यह नया ज्ञान है, जो हमें वेद शास्त्रों से नहीं मिला। अभी स्वयं सत् बाप ने अपनी सही पहचान दी है।

2) योग का आधार ज्ञान है। जितना ज्ञान पर आधारित होंगे, उतना ही योग बल कमा सकेंगे। ज्ञान का फाउन्डेशन ही हमारी इस जीवन के इमारत का फाउन्डेशन है। ज्ञान का फाउन्डेशन नहीं तो समझो योग का भी फाउन्डेशन नहीं है। तो सबसे पहला फाउन्डेशन है ज्ञान। ज्ञान और योग का फाउन्डेशन फिर है निश्चय। तो हर एक अपने आपसे पूछे कि हमें जो ज्ञान मिला है, उस पर कहाँ तक निश्चय है? ज्ञान की सब प्वॉइन्ट्स पर मेरा निश्चय है या कहीं दिल में प्रश्न है? दूसरा क्या मेरा निश्चय है कि हमें कौन पढ़ा रहा है? जिसको दुनिया ढूँढती है - वह बाप हमारे पर कुर्बान है अथवा जिसे दुनिया, ऋषि-मुनि, भगत आदि सब पाने के लिए इतने जप, तप आदि करते हैं, वह हमने जीवन में पाया है। पाया है यह दिल से अनुभव होता है या कहते हैं भगवान पढ़ाता है हाँ, ठीक है! एक है हाँ ठीक है, एक है मुझे भगवान पढ़ाता है - मैं कुर्बान हूँ, वह मेरे पर कुर्बान है। इतना भगवान के ऊपर निश्चय है? सबने भगवान को अपना जीवन सौंप दिया है या अभी ट्रायल कर रहे हो? गीत में कहते हैं प्यार करो, चाहे ठुकराओ... तो भगवान परीक्षायें भी लेता है, ऐसे ही स्वीकार नहीं करता है। उनकी परीक्षायें ऐसी वन्डरफुल आती जो न चाहते भी बुद्धि घूम जावे। जो मालूम भी नहीं पड़ता कि कैसे मैं पेपर में फेल हो गया। उसका टेस्ट पेपर बड़ा वन्डरफुल होता, जिसको समझो तो समझ से परे, सोचो तो सोचने से परे, वर्णन करो तो वर्णन से परे होता, लेकिन होता टेस्ट की तरह है। अगर टेस्ट पेपर नहीं होता तो आज आश्चर्यवत सुनन्ती, पश्यन्ती, कथन्ती और आश्चर्यवत भागन्ती नहीं होते। तो यह टेस्ट पेपर हर एक का होता है जिसमें अनेक बातें आती हैं।

3) जैसे जौहरी भी पहले आई-ग्लास से टेस्ट करता कि हीरा कैसा है, सोने को भी घिसता है तो खबर होती कि सोना है या आर्टिफिशियल सोना है, दिखाऊ सोना है या सच्चा सोना है। आजकल अमेरिकन हीरे अमेरिकन सोना बहुत निकल गया है। आज की दुनिया का आर्टिफिशियल भभका बहुत है लेकिन हम इस दुनिया के आर्टिफिशियल भभकों से बहुत परे हैं। तो सबसे पहले चेक करो कि प्राण भले जावे तो जावे लेकिन हे बाबा तेरे साथ जो मेरा प्रण है वह नहीं छूटे, चाहे मारो चाहे ठुकराओ –हम आपके होकर रहेंगे। ऐसा वायदा पक्का है? बाबा कहता था, मैं आर्डर करूंगा कि तुम योगी नहीं हो गेट आउट। और बरोबर तुम्हारी गलतियाँ साबित करके कहूँगा गेट आउट.. तो क्या तुम गेट आउट होंगे या द्वार पर प्राण छोड़ेंगे। बाबा ऐसे एक हंसी से बोलता था। परन्तु बाबा देखता था कि कहाँ तक इसका प्रण और प्राण है? एक है प्रण एक है प्राण। तो कहा जाता प्राण भले जावे परन्तु प्रण न जावे। तो यह है निश्चय की परख।

4) कि हमारा निश्चय कहाँ तक है? निश्चय की टेस्टिंग है - सर्वन्श त्यागी। अगर सर्वन्श त्यागी हो तब तो निश्चय है। अगर सर्वन्श त्याग नहीं है तो निश्चय में कमी है, गडबड़ है। तो यह सब सोचो, विचारों कि मेरे में त्याग और तपस्या की शक्ति कितनी है? त्याग माना सब बातों का त्याग, नींद का त्याग, खाने-पीने का त्याग, आराम का त्याग, सुख-सुविधाओं का त्याग, इनसे भी बड़ा त्याग होता है बुद्धि का त्याग, मनमत का त्याग, संगदोष का त्याग, इगो का त्याग, देह-अभिमान का त्याग, मन की इच्छाओं का त्याग, तन की इच्छाओं का त्याग यह बहुत बड़े त्याग होते हैं। तो यह सब त्याग मैंने किये हैं या नहीं? मन की इच्छायें रही हुई तो नहीं हैं? जैसे भक्त लोग श्रावण मास में बहुत करके व्रत रखते हैं, कई तो 31 दिन व्रत रखते हैं, अन्न-जल नहीं लेते हैं तो आप लोगों की भट्टी भी यह एक व्रत है। तो भट्ठी में चेक करो कि ऐसे त्यागी तपस्वी हैं? जब तक त्याग तपस्या नहीं है तब तक सेवाओं में भी सफलता नहीं होगी।

5) कई बार सेवा का भी हमें त्याग करना पड़ता है। कोई कोई करते सेवा हैं परन्तु सेवा करते भी मान की इच्छा रहती है तो वह सेवा सफल नहीं मानी जाती है। तो हमें सब कुछ त्याग रख करके चलना पड़ता है। संगठन के सहयोग से चलने की भी बहुत बड़ी शक्ति चाहिए। सेवा करने की शक्ति है परन्तु इन्डिपेन्डेन्ट की शक्ति है, सहयोग के संगठन की शक्ति नहीं है तो बड़ा मुश्किल होता है क्योंकि आखिर चलना संगठन में है इन्डीविज्युअल में नहीं रहना है, तो सभी को अपनी टेस्ट करनी चाहिए। अच्छा।